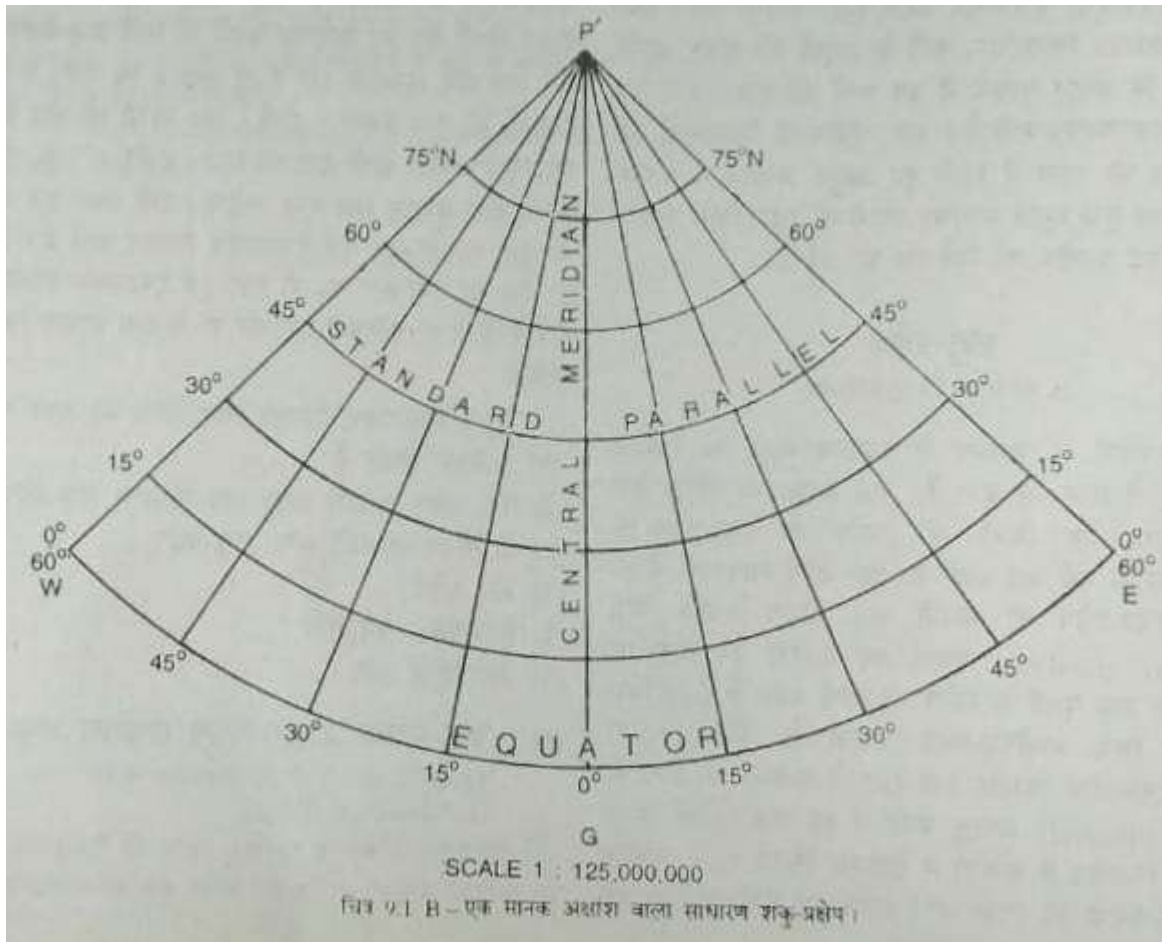


**एक मानक अक्षांश वाला शंकु प्रक्षेप**  
**(Conical Projection with One Standard Parallel)**

*बोलेन्द्र कुमार अगम,  
 सहायक प्राध्यापक भूगोल,  
 राजा सिंह कॉलेज सिवान*

इस प्रक्षेप में कागज का शंकु ग्लोब को किसी एक अक्षांश वृत्त (मानक अक्षांश) पर स्पर्श करता है। भूमध्यरेखा तथा ध्रुव को छोड़कर आवश्यकतानुसार किसी भी अक्षांश वृत्त को मानक अक्षांश चुनकर इस प्रक्षेप की रचना की जा सकती है। अन्य शंकु प्रक्षेप की तुलना में इस प्रक्षेप की रचना बहुत सरल होती है।



चित्र स्रोत: प्रायोगिक भूगोल, रस्तोगी प्रकाशन, जे० पी० शर्मा

**पहचान (Identification)**

एक मानक अक्षांश वाले साधारण शंकु प्रक्षेप को निम्नलिखित लक्षणों के आधार पर पहचाना जा सकता है:

1. समस्त अक्षांश वृत्त शंकु के शीर्ष को केंद्र मानकर खींचे गए संकेंद्र वृत्तों के चाप होते हैं तथा इनके बीच की दूरी एक समान होती है ।
2. समस्त देशांतर रेखाएं सरल रेखाओं के रूप में होती हैं जो शंकु के शीर्ष पर परस्पर मिल जाती हैं ।
3. प्रक्षेप का ध्रुव एक चाप के द्वारा प्रकट होता है ।
4. अक्षांश वृत्त तथा देशांतर रेखाएं एक दूसरे को समकोण पर काटती हैं ।
5. ध्रुव से भूमध्य रेखा की ओर को देशांतर रेखाओं के बीच की दूरी बढ़ती जाती है परंतु किसी भी एक अक्षांश वृत्त पर देशांतर रेखाओं के बीच की दूरी एक समान होती है ।

### गुणधर्म (Properties)

एक मानक अक्षांश वाले साधारण शंकु प्रक्षेप में निम्नलिखित गुण धर्म होते हैं

1. मानक अक्षांश पर मापनी शुद्ध होती है परंतु शेष अक्षांश वृत्तों पर मापनी शुद्ध नहीं रहती ।
2. समस्त देशांतर रेखाओं पर मापनी शुद्ध होती है । अतः इस प्रक्षेप को समदूरस्थ शंकु प्रक्षेप भी कहते हैं ।
3. इस प्रक्षेप बने मानचित्र में कोई स्थान मानक अक्षांश से जितना अधिक दूर स्थित होगा उतना ही उस स्थान के अक्षांश वृत्त की मापनी अधिक अशुद्ध होगी । अतः मानक अक्षांश से दूरी बढ़ने के साथ-साथ प्रदेशों की आकृति एवं क्षेत्रफल में भी विकृति बढ़ने लगती है ।
4. मानक अक्षांश पर आकृति एवं क्षेत्रफल का बहुत सीमा तक सही-सही प्रदर्शन हो जाता है ।
5. इस प्रक्षेप पर केवल एक गोलार्द्ध (उत्तरी या दक्षिणी) का मानचित्र बनाया जा सकता है ।

### उपयोग (Use)

मध्य अक्षांशों में स्थित छोटे-छोटे देशों के मानचित्र बनाने के लिए इस प्रक्षेप को प्रायः प्रयोग में लाया जाता है । इसके अतिरिक्त इस प्रक्षेप पर ऐसे प्रदेशों के भी मानचित्र बनाए जाते हैं जिनका अक्षांशीय विस्तार कम होता है ।

.....  
 सन्दर्भ: प्रायोगिक भूगोल, रस्तोगी प्रकाशन, जे० पी० शर्मा  
 .....